भारतीय समाज का तीसरा निम्न वर्गीय समाज स्त्रियों का है जिसकी पराधीनता की व्यथा-कथा नागार्जुन अपने हिन्दी और मैथिली के उपन्यासों में कहते रहे हैं और हिन्दी तथा मैथिली की कविताओं में भी। मैथिली में उन्होंने 'बूढ़ वर', 'बिलाप' और 'लखिमा' जैसी कविताओं में स्त्री की यातनाभरी जिन्दगी के अनुभवों को व्यक्त किया है तो हिन्दी में 'तालाब की मछलियाँ' नाम की कविता में। तालाब की मछलियाँ की एक विशेषता यह है कि इसमें स्त्री की गुलामी की पीड़ा की अनुभूति के साथ मुक्ति की आकांक्षा भी इस तरह व्यक्त हुई है :

उथल पुथल है जन-जीवन में
सभी ओर उत्क्रान्ति हो रही,
टूट रहे हैं अन्तःपुर के ढाँचे
आज या कि कल
तुम भी तो निकलोगी बाहर
हवेलियों से, डेवढ़ियों से
फिर जनपद के खंडनरक ये मिट जाएँगे
शब्दकोश को छोड़ कहीं भी
नहीं 'असूर्यम्पश्या' का अस्तित्व रहेगा
'औरतदारी' रह न जाएगी

यह कविता नागार्जुन की काव्य कला की दो बुनियादी विशेषताओं को प्रकट करती है। एक तो यह कि वे प्रायः कथा के माध्यम से जीवन के अनुभवों को व्यक्त करते हैं। उनकी प्रत्येक कविता में, चाहे वह छोटी हो या बड़ी एक कथा जरूर होगी। दूसरी विशेषता यह कि नागार्जुन प्रायः कविता के रचाव में रूपक का प्रयोग करते हुए मुक्ति की आकांक्षा की अभिव्यक्ति करते हैं। ऐसा रूपक 'हरिजन गाथा' में है और 'तालाब की मछलियाँ' में भी।

जनकवि नागार्जुन भारतीय समाज की वर्गीय संरचना की बारीकियों और जटिलताओं को जितनी स्पष्टता से पहचानते हैं उतनी ही सहजता, निर्भीकता और पक्षधरता के साथ व्यक्त भी करते हैं। ऐसे प्रसंगों में भी वे दुविधा और असमंजस की भाषा नहीं बोलते। वे मध्यवर्ग के दम्भ और तुनुकमिजाजी को खूब समझते हैं, इसीलिए मजदूरों से दूरी बनाये रखने की उनकी आदत पर व्यंग्य करते हुए मजा लेते हैं। उनकी एक लोकप्रिय कविता है 'घिन तो नहीं आती है?'

कुली-मजदूर हैं
बोझा ढोते हैं, खींचते हैं ठेला
धूल-धुआँ-भाफ से पड़ता है साबका
थके-माँदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर

Scanned with CamScanner

सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन
आकर ट्राम के अन्दर पिछले डब्बे में
बैठ गये हैं इधर-उधर तुमसे सटकर
आपस की उनकी बतकही
सच-सच बतलाओ,
नागवार तो नहीं लगती हैं?
जी तो नहीं कुढ़ता है
घिन तो नहीं आती है?

इसको पढ़ते हुए पाठक नागार्जुन के व्यंग्य की क्षमता, विनोद की प्रवृत्ति और खिलन्दड़ापन को एक साथ अनुभव कर सकते हैं और पक्षधरता को भी जान सकते हैं।

नागार्जुन की एक कविता है 'वे और तुम' इस कविता में 'वे' मजदूरों और किसानों के लिए प्रयुक्त हुआ है और 'तुम' मध्य वर्ग के बुद्धिजीवी, विशेषरूप से आत्मबद्ध कवियों के लिए। कविता का पहला हिस्सा यह है :

वे लोहा पीट रहे हैं
तुम मन को पीट रहे हो
वे पत्तर जोड़ रहे हैं
तुम सपने जोड़ रहे हो
उनकी घुटन ठहाकों में घुलती है
और तुम्हारी घुटन?
उनींदी घड़ियों में चुरती है

इसमें एक ओर मजदूरों का स्वभाव, उनका कर्म और उनकी मानसिकता है तो दूसरी ओर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का स्वभाव, व्यवहार और मानसिकता। नागार्जुन यह जानते हैं कि व्यक्ति या वर्ग का अस्तित्व ही उसकी चेतना का स्वरूप निर्मित करता है।

इस कविता के दूसरे हिस्से में कवि किसानों की चेतना से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की चेतना का अन्तर बताता है :

वे हुलसित हैं
अपनी ही फसलों में डूब गये हैं
तुम हुलसित हो
चितकबरी चाँदनियों में खोये हो
उनको दुःख है
नये आम की मंजरियों को पाला मार गया है

Scanned with CamScanner

तुमको दुःख है
काव्य-संकलन दीमक चाट गये हैं।

ऐसी कविताओं के कारण ही नागार्जुन मजदूरों और किसानों के अपने कवि हैं, उनके बीच अनन्य रूप से लोकप्रिय, लेकिन ऐसी कविताओं ने ही अभिजनवादी कवियों और आलोचकों को नागार्जुन की उपेक्षा और विरोध के लिए उकसाया है। नागार्जुन ने कवि और कविता की इस स्थिति का चुनाव स्वयं किया है, सजग और सचेत रूप से। यह अनजाने में और अचानक नहीं हुआ है। इसीलिए वे कहते हैं कि मैं औघड़ गोत्र का कवि हूँ, अभिजात समुदाय मुझे क्यों पसन्द करेगा।

नागार्जुन अपनी राजनीतिक कविताओं को सीधे जनता की दिलो-दिमाग तक पहुँचाने के लिए कभी-कभी पुराने काव्यरूपों का भी प्रयोग करते हैं। ऐसी ही उनकी एक लोकप्रिय कविता है 'आओ रानी, हम ढोएँगे पालकी'। एक लोक धुन की मदद से रची गयी यह कविता एक ओर लोक लय से कवि के लगाव को प्रकट करती है तो दूसरी ओर उसकी साम्राज्यवाद विरोधी चेतना को भी। ऐसी ही उनकी एक और कविता है अमेरिका के राष्ट्रपति जान्सन पर, जिसका एक हिस्सा यह है :

हम काहिल हैं, हम भिखमंगे, तुम हो औढरदानी
अब की पता चला है प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी
हम निचाट धरती निदाघ की, तुम बादल बरसाती
अबकी पता चला है प्रभुजी तुम दीपक हम बाती

इस कविता का कोई भी पाठक यह जरूर महसूस करेगा कि रैदास के एक प्रसिद्ध पद के ढाँचे का प्रयोग करते हुए नागार्जुन ने अमेरिकी साम्राज्यवाद की सेवा के लिए तत्पर भारतीय शासक वर्ग की इस कविता में वैसी ही आलोचना की है जैसी 'आओ रानी, हम ढोएँगे पालकी' में है। नयी अन्तर्वस्तु और नये अर्थ की मदद से पुराने रूप में नयी सार्थकता पैदा करने का सफल प्रयत्न नागार्जुन ने कई दूसरी राजनीतिक कविताओं में भी किया है। ऐसी ही उनकी एक कविता है शासन की बन्दूक, जिसमें दोहा छन्द को नया जीवन मिला है।

नागार्जुन केवल अन्यों की ही ओलाचना नहीं करते, वे अपनी और अपनों की भी आलोचना करते हैं। अगर आप उनकी अपनी आलोचना देखना चाहते हैं तो 'थकित-चकित-भ्रमित-मन, रहा उनके बीच मैं, मन करता है, पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने' जैसी कविताएँ पढ़िए। अपनी घोषित प्रतिबद्धता के बावजूद उन्होंने वामपन्थी विचारधारा के छद्म और दुरुपयोग की आलोचना 'एक क्रान्तिकारी' और 'वो हमें चेतावनी देने आये थे' जैसी कविताओं में की है।

नागार्जुन की कविता के भाव-लोक में केवल आक्रोश, विक्षोभ, आलोचना, आक्रमण और कटाक्ष ही नहीं है। यह सब उनकी राजनीति और सामाजिक कविताओं

Scanned with CamScanner